जादुई मुरली प्रस्ताव क्यों और कैसे

जादुई मुरली की कहानी

बहुत पहले की बात है जब संसार को अंधकार ने ढ़का हुआ था । लोग मुस्कुराना भूल गऐ थे और कोई भी जीवन का आनंद नहीं ले रहा था । हरेक दिल का दीया बुझा हुआ था । संसार की ऐसी दुखद हालत देख कर कृष्णा चुपके से एक उपवन में नीचे उतरे और अपनी जादुई मुरली बजानी आरम्भ् कर दी । इसके बाद कुछ अदभुत हुआ । कुछ लोग जो उनके बिल्कुल क़रीब थे वे कुछ सुन नहीं पा रहे थे । और कुछ लोग जो हज़ारों मील दूर थे वे संगीत को बहुत स्पष्ट सुन पा रहे थे और उनका दिल गदगद हो रहा था । जो कुछ भी वह कर रहे थे उन्होंने वह बंद कर दिया । जो भोजन पका रहे थे उन्होंने भोजन पकाना बंद कर दिया । जो काम कर रहे थे उन्होंने काम करना बंद कर दिया । जो अपने दोस्तों से बात कर रहे थे वे चुप हो गऐ । जिस ने भी जादुई मुरली को सुना वह उसकी ओर चल पडे जैसे कि वे सब मोहित हो गये । जल्दी ही सैकड़ों लोग मुरली की धुन का पीछा करते हुए घने जंगल में पहुंच गऐ जहां कृष्णा मुरली बजा रहे थे । वहां पहुँचकर उन्होंने नाचना आरम्भ कर दिया, जैसे कि उनमें जान आ गई, वे एक दुसरे को देखकर मुस्कुराने लगे । नाचते हुए सभी खुशी से चमक उठे ।

संसार को अंधेरे में रखने का असुर कंस का दृढ़ संकल्प था, उसे मुरली के बारे में पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ । उसने कृष्णा के जंगल में एक हत्यारा भेजा जिसने नृत्य को बंद कर दिया और मुरली के असंख्य टुकड़े कर दिये । कृष्णा ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराने लगे क्योंकि उन्हें मालूम था कि आगे क्या होने वाला है । मुरली के टुकड़ों को पंख लग गऐ और जादुई मुरली के टुकड़े उड़ कर पृथ्वी के चारों कोनो में पहुँच गऐ । अब संगीत और भी शक्तिशाली और मनमोहक हो गया जब तक पृथ्वी पर हर किसी ने संगीत नहीं सुना और खुशी में नाचने नहीं लगे । और इसके पश्चात संसार में खुशी, रोश्नी और सुन्दरता लौट आई ।

बाबा की मुरली

कृष्णा की मुरली के टुकड़ों की तरह कार्य करने के लिए और संसार में अत्यंत आनंद लाने के लिए, हमें स्व-परिवर्तन के लिए जादुई मुरली निमंत्रण को स्वीकार करना होगा । जादुई मुरली एक सामूहिक भटटी है जो कि बाबा की मुरली के जादुई गुणों का और आत्मा की स्व-परिवर्तन की यात्रा में इससे क्या चमत्कार हुए हैं उस पर गहन शोध् करती है ।

बाबा की मुरली की धूप में हमारी स्वाभाविक दिव्यता विकसित होती है । जब आत्मा याद और सच्चाई की धुन पर नाचती है तो साधारण और लौकिक से उपर उठकर परमात्मा के दिल तक पहुँच जाती है । हमें बाबा की मुरली का चमत्कार अनुभ्व होता है । इसके गीत

आत्मा को सम्मोहित कर देते हैं और आत्मा में आनंद की जागृती होती है । इसके स्वर-संगति से आत्मा में ज्ञानोदय होता है ।

जिस प्रकार कृष्णा की मुरली से संसार में आनंद, प्रकाश और सुन्दरता आई, तो चलिए बाबा की मुरली का प्रयोग करके भी वही दिव्य प्रभाव लाऐं । जब हम ज्ञान का डाँस करते हैं तो हम पर मुरली का प्रभाव शुरू हो जाता है । आध्यात्मिक जादूगर अपनी याद को जादूई मुरली की कला और विज्ञान के माध्यम से परिवर्तन कर देता है । यह सब इतना निरंतर और सहजता से होता है कि जादू जैसा ही लगता है । लेकिन हम इसके विभ्भिन्न तत्वों का विश्लेषण करके समझ सकते हैं और जादू की कला में निपुण बन सकते हैं ताकि हम भी ब्रहमा बाबा के समान कर्मातीत और अव्यक्त बन जाऐं।

यह प्रस्ताव 6 सप्ताह तक चलेगा । इसका आरम्भ् सोमवार, 11 मई, 2015 को होगा और रविवार, 21 जून 2015 को अंत होगा । इसके लिए टीम आपको याद, वृती, और दृष्टि के बिन्दू प्रतिदिन की मुरली से उपलब्ध् करवाएगी । इन बिन्दूओं पर 7:00-7:30 नुमाशाम योगाभ्यास के लिए एक ऑडियो कॉमेंटरी भेजी जाऐगी ।